THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

शाश्वत जीवन अभी है

Eternal life is now

Author- Evan Mehlenbacher

Christian Science Sentinel Vol 113, No. 23, June 6, 2011

एक दिन मैंने अपने आप को एक प्रश्न से जूझते हुए पाया "अच्छा है, अगर जीवन शाश्वत है, तो यह कब शुरू हुआ?

हाँलाकि मैं विश्वास करता हूँ कि जीवन शाश्वत है, इस प्रश्न ने मुझे अचम्भे में डाल दिया। आम मत अक्सर शाश्वत जीवन को एक ऐसे अनुभव की तरह प्रस्तुत करता है जो किसी को मृत्यु के पश्चात होता है। एक अच्छा जीवन व्यतीत करो, आम क्रिश्चियन तर्क पुष्टि करता है, क्राइस्ट जीसस को अपना मुक्तिदाता स्वीकार करो, सांसारिक विद्यमानता को अच्छी शर्तों पर खत्म करो, और तुम स्वर्ग में स्वीकार कर लिए जाओगे। और यहीं से शाश्वत जीवन शुरू होता है।

परन्तु यह सम्भव नहीं है, मैंने तर्क किया। शाश्वत की एकमात्र परिभाषा कोई आरम्भ या अंत न होना है, एक वृत की तरह जो पूर्ण है। मृत्यु जीवन को जन्म नहीं देती। शाश्वतता केवल समय अवधि में एक बिंदु से या कुछ धर्म रस्मों जैसे शुद्धिकरण या चर्च में शामिल होने से शुरू नहीं होती। शाश्वत विद्यमानता **परमेश्वर** से एक उपहार है जो कि हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह हमारे पास पहले से ही है। हम शाश्वत आध्यात्मिक जीवन ठीक अभी से जी रहे हैं।

जीसस ने इस वास्तविकता को स्पष्ट रूप से समझा जब उन्होंने सिखाया, "अब्राहम से पहले, मैं हूँ" (यूहन्ना 8:58); " मैं और मेरा पिता एक हैं" (यूहन्ना 10:30); " क्या और अगर तुम मानव के पुत्र को ऊपर उठते देखोगे जहाँ वह इस से पहले था?" (यूहन्ना 6:62)। जीसस धरती पर चले, नश्वरों से बातचीत की, बीमार को स्वस्थ किया, और पड़ौसियों के साथ खाया, फिर भी उन्हें परमेश्वर के साथ अपनी शाश्वत आध्यात्मिक विद्यमानता पर विश्वास था, जिसका कोई आरम्भ या अंत नहीं था।

मानव के अस्तित्व की निर्विरोध निरतंरता का वर्णन करते हुए मेरी बेकर एडी ने लिखा "मानव मृत्यु रहित आध्यात्मिक है।" और उन्होंने कहना जारी रखा, "वह **जीवन** की विशाल अनंतता को प्राप्त करने के लिए समय के अवरोध को नहीं लांघता क्योंकि वह **परमेश्वर** और ब्रह्माण्ड के साथ सहविद्यमान है" (सायँस एंड हैल्थ, पृष्ठ 266)

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

शाश्वत जीवन बिल्कुल वही है जो होता है–सदा के लिए। तथा परमेश्वर के बच्चे होने के नाते हमारे पास बिना व्यवधान के अनश्वरता है।

यह समझना मुक्तिदायक होगा, कि हमारी परमेश्वर के साथ सहविद्यमानता की कोई जन्म तिथि या एक अन्तिम तिथि नहीं होती। यह हर एक क्षण जिसे हम अब कहते हैं, में घटित हो रही है। परमेश्वर का बच्चा होने के नाते हमारी विशिष्टता अस्थायी तौर पर आत्मा से नश्वर मायूसी, जीर्णावस्था, तथा निराशा की स्थिति से परे नहीं होती और फिर इसे अपना रास्ता वापिस ढूंढना पड़े। अनंतता सीमितता में नहीं घटती। अनश्वर, नश्वर के स्तर पर नीचे नहीं आता । शाश्वत जीवन बिल्कुल वही है, जो होता है–सदा के लिए। और परमेश्वर के बच्चे होने के नाते, हमारे पास बिना व्यवधान के अनश्वरता है।

हम में से हर कोई जिस तरह जीसस ने लॉजरस की मृत्यु पर प्रतिक्रिया दी थी, से सीख सकता है कि कैसे नश्वरता की परिस्थितियों को काबू किया जा सकता है जो जीवन को प्रतिबंधित करेंगी तथा सेहत को खत्म करेंगी।

जीसस को अपने मित्र लॉजरस को स्वस्थ करने के लिए बुलाया गया था जो कि मृत्यु शैय्या पर था और फिर मर गया। तीन दिन बाद, जीसस उसकी समाधि पर पहुँचे। दुःख और निराशा सम्प्रदाय पर हावी थी। परंतु जीसस ने लॉजरस के बारे में उससे अधिक देखा जो साथ खड़े हुए देख रहे थे।

सोच को और ऊँचा उठाने के लिए जीसस ने अपने सामने समाधि के आगे से पत्थर हटवाया, और, जैसे जॉन के सुसमाचार सूचित करते हैं, ''उन्होंने ऊँची आवाज में पुकारा'', लॉजरस, बाहर आओ (यूहन्ना 11:43) और लॉजरस बाहर आया। ''अस्वाभाविक!'' कई दर्शकों ने विरोध किया होगा। वह एक मृतक शरीर से बात कर रहे थे और उसे उठने के लिए और चलने के लिए निर्देश दे रहे थे। परंतु जीसस मनरहित शरीर से बात नहीं कर रहे थे, भौतिक पदार्थ को पुर्नजीवित करने की और उसे वापिस जीवन में लाने की कोशिश करते हुए। क्रिश्चियन साँयस व्याख्या करती है, उन्होंने समझा कि लॉजरस जीवित और सकुशल था, सारी विद्यमानता के पालनहार, दिव्य मन में अपना शाश्वत, आध्यात्मिक जीवन जीते हुए। वह जानते थे कि मृत्यु की तस्वीर एक इन्सानी मन का भ्रम था, जिसे वह बदल सकते थे और बेहतर कर सकते थे। और अपने आस–पास के लोगों को यह सत्य दिखाने में मदद करने के लिए जीसस ने उनकी इन्सानी चेतना से बात की और उसे इस मत से जगाया कि लॉजरस मर चुका था। जीसस द्वारा सोच को ऊँचा उठाने की कोशिशें प्रभावशाली थी ओर लॉजरस कब्र से जिन्दा चल कर बाहर आ गया।

लॉजरस के पुर्नजीवित होने पर टिप्पणी करते हुए, श्रीमति एडी ने लिखा, ''जीसस ने लॉजरस को इस समझ के साथ स्वस्थ किया कि लॉजरस कभी मरा नहीं था, न कि इस स्वीकृति से कि उसका शरीर मरा था और फिर जीवित हुआ था'' (साँयस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 75)। जीसस ने सदा के लिए प्रमाणित किया कि जीवन शाश्वत है। परमेश्वर हमारा जीवन है। यह भौतिक प्रदार्थ में आरम्भ या खत्म नहीं होता, परन्तु सदा के लिए परमेश्वर, आत्मा के साथ एक हो कर बना रहता है।

एक दिन मुझे एक बर्जुग औरत के घर बुलाया गया जिसके परिचारक को डर था कि जल्दी ही उसका निधन होने वाला है। वह किसी के आवाज लगाने पर या प्रेरित करने पर प्रतिक्रिया नहीं करती थी। मैं उस औरत के कमरे में गया। वह जीवन के नाम मात्र संकेत प्रर्दशित करती हुई अपने बिस्तर पर सीधी लेटी

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

हुई थी। कमरे में अकेले, मैं उसके बिस्तर पर घुटनों के बल बैठ गया और परमेश्वर मे उसके जीवन के बारे में सत्य पर प्रार्थना की। मैं जानता था कि वह जिंदा थी और आत्मा में सकुशल थी और यह कि उसकी विद्यमानता न तो खत्म और न ही ओझल हो रही थी। जीवन सदा बना रहता है, मैंने आग्रह किया। वह औरत बूढ़ी होती हुई, नश्वर नहीं थी, अपितु दिव्य मन द्वारा संपोषित, जीवन का शाश्वत प्रकटीकरण थी। मैंने सत्य को उसके लिए ऊँची आवाज में बोला। शीघ्र ही, एक अंगुली लेश मात्र हिली, फिर एक हाथ, एक बाजू और मिनटों में ही वह बिस्तर के किनारे पर बैठी थी, मुस्कुराते हुए और बातचीत में व्यस्त होते हुए।

'जीवन शाश्वत है' एडी ने समझाया। और उन्होंने कहना जारी रखा, ''हमें यह पता लगाना चाहिए और इस तरह प्रत्यक्षीकरण शुरू कर देना चाहिए। जीवन और अच्छाई अनश्वर है''(पृष्ठ 246)। जीसस ने सूली पर चढ़ाए जाने के अपने डर पर विजय प्राप्त की क्योंकि वह जानते थे, सूली, कीलें और भाला उनके जीवन के लिए खतरा नहीं थे। वह जानते थे कि उनका अस्तित्व आध्यात्मिक था, भौतिक पदार्थ में विद्यमानता के स्वप्न से ऊपर और परे। उन्होंने अपने शत्रुओं को उन्हें मारने दिया यह दिखाने के लिए कि वे ऐसा नहीं कर सके और बाद में उन्होंने समाधि को तीन दिन बाद छोड़ दिया था, जीवन की अनश्वरता को प्रमाणित करते हुए।

जीसस ने अपने अनुयायियो को बताया, ''मैं अपने पिता में हूँ और तुम मुझ में हो और मैं तुम में हूँ'' (यूहन्ना 14:20)। वही क्राईस्ट जीवन जिसने जीसस को संपोषित किया था, हमें संपोषित करता है। जैसे पिता शाश्वत है, हम शाश्वत हैं, बिना किसी आरम्भ के और अंत के।

भौतिक पदार्थ में जीवन का भौतिक स्वप्न अपने सारे पाप, बीमारी तथा मृत्यु के साथ खत्म हो जाता है, परंतु हमारी आत्मा में विशिष्टता का कोई आरम्भ या अंत नहीं है। यह सदा के लिए सम्पूर्ण परमेश्वर के प्रेम में सुरक्षित होता है।

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.